शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक २४ : नई दिल्ली : ८-१४ सितम्बर २०१७

संवत्सरी महापर्व के अवसर पर
परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन प्रवचन

धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। अहिंसा, संयम और तप धर्म के आयाम हैं। उस मनुष्य को देवता भी नमस्कार करते हैं, जिसका मन सदा धर्म में रत रहता है। संवत्सरी धार्मिक साधना का एक महत्त्वपूर्ण दिवस है। यह दिन वर्ष में एक बार (भाद्रव शुक्ला पंचमी अथवा भाद्रव शुक्ला चतुर्थी) को आता है। जो दिन धर्मसंघ द्वारा, आचार्यप्रवर द्वारा हमारे धर्मसंघ में निर्णीत हो जाता है, स्वीकृत हो जाता है, उस दिन यह संवत्सरी महापर्व मनाया जाता है। इसका चालू नाम संवत्सरी है। संवत्सर का अर्थ वर्ष होता है। संवत्सरी एक वर्ष में एक बार आने वाला दिन है। आज के दिन सायंकाल जो प्रतिक्रमण किया जाता है, वह सांवत्सरिक प्रतिक्रमण होता है।

प्रतिक्रमण पांच प्रकार का होता है। प्रतिदिन सायंकाल जो प्रतिक्रमण होता है, वह दैवसिक प्रतिक्रमण होता है और सूर्योदय से पहले रात के अंतिम एक मुहूर्त में जो प्रतिक्रमण होता है, वह रात्रिक प्रतिक्रमण होता है। एक पक्ष की सम्पन्नता या जो भी तिथि (अमावस्या/पूर्णिमा/चतुर्दशी) निर्धारित हो, उस दिन सायंकाल पाक्षिक प्रतिक्रमण होता है। आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन महीने की पाक्षिक तिथि पूर्णिमा अथवा चतुर्दशी को सायंकाल होने वाला प्रतिक्रमण चातुर्मासिक पाक्षिक प्रतिक्रमण होता है। संवत्सरी को होने वाला सायंकालीन प्रतिक्रमण सांवत्सरिक प्रतिक्रमण होता है। एक यह भी विशेष बात होती है कि दैवासिक और रात्रिक प्रतिक्रमण में चार लोगस्स, पाक्षिक प्रतिक्रमण में बारह लोगस्स, चातुर्मासिक पाक्षिक प्रतिक्रमण में बीस लोगस्स और सावंत्सरिक प्रतिक्रमण में चालीस लोगस्स का ध्यान होता है यानी लोगस्स के ध्यान से भी प्रतिक्रमण की गरिमा को आंका जा सकता है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सांवत्सरिक प्रतिक्रमण होता है।

श्रावक हो या साधु, प्रतिक्रमण में यह प्रयास रहना चाहिए कि एक मुहूर्त रात बीत जाने से पहले-पहले प्रतिक्रमण पूरा हो जाए। समय की अल्पता के कारण सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में चालीस लोगस्स का ध्यान न हो पाए तो चालीस लोगस्स का ध्यान बाद में कर लेना चाहिए। एक बार चार लोगस्स का ध्यान यथास्थान कर लें, फिर प्रतिक्रमण पूरा करके एक मुहूर्त पूरा हो जाने के बाद भी चालीस लोगस्स का ध्यान किया जा सकता है। चार लोगस्स का ध्यान पहले करने से मुहूर्त की सीमा अतिक्रांत नहीं होगी। ऐसा नहीं कि चार लोगस्स का ध्यान पहले कर लिया बाद में छत्तीस लोगस्स का ध्यान ही करें, बाद में भी चालीस लोगस्स का ध्यान ही करना चाहिए। इसी तरह पक्खी के दिन भी यदि समय कम है तो चार लोगस्स का ध्यान पहले कर लेना चाहिए और बारह लोगस्स का बाद में कर लेना चाहिए। चालीस लोगस्स एक साथ करने में अनुकूलता न हो तो बीस-बीस लोगस्स का ध्यान भी किया जा सकता है।

संवत्सरी का प्रतिक्रमण विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। इसमें चालीस लोगस्स का ध्यान और वर्ष भर की आलोचना होती है। आज के दिन प्रतिक्रमण में सांवत्सरिक संदर्भ में बार-बार 'मिच्छामि दुक्कड़ं' बोलकर वर्ष भर के पापों की शुद्धि करने का प्रयास किया जाता है। विशेष दोष लगे हों तो उनका अलग से वार्षिक प्रायश्चित्त भी लेना चाहिए। सामान्यतया साधुओं को पक्खी को एक उपवास, चातुर्मासिक पक्खी को दो उपवास और संवत्सरी के प्रतिक्रमण के संदर्भ में तीन उपवास का प्रायश्चित्त दिया जाता है।

प्राचीनकाल में संवत्सरी नाम नहीं था, वर्तमान में आज के इस मुख्य दिन को संवत्सरी कहा जाता है और

इससे पहले सात दिन और जोड़ दिए गए, उन्हें पर्युषण कहा जाता है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्राचीनकाल में पहले सात दिन जुड़े हुए नहीं थे, बाद में किसी मनीषी ने जोड़े हैं। वैसे आठों दिनों को पर्युषण मान लें तो यह अंतिम व अष्टम दिन संवत्सरी का होता है, जो पर्युषण का शिखर दिन होता है, सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम दिन होता है। श्वेताम्बर परंपरा में सामान्यतया भाद्रपद शुक्ला पंचमी से पहले सात दिन जोड़े गए और दिगम्बर परंपरा में उसके बाद में नौ दिन जोड़े गए। इस प्रकार जैन परंपरा के लगभग सत्रह दिनों में लगभग इधर सात और उधर नौ दिनों के बीच का दिन संवत्सरी होता है।

वर्ष में कुछ-कुछ धार्मिक काल तय कर दिए गए हैं, जैसे--मुसलमानों में रमजान का समय होता है, तब वे भी अपनी तपस्या साधना करते हैं। उधर चैत्र व आश्विन माह के नवरात्रों में पूजा, साधना और व्रत का क्रम चलता है। जैन शासन में श्वेताम्बर परंपरा में हमारे यहां पर्युषण के रूप में आष्टाह्निक कार्यक्रम मनाया जाता है। इसको पर्वाधिराज कहा जाता है। वैसे तो होली, दीवाली आदि अनेक पर्व हैं, वे आमोद-प्रमोद वाले पर्व हैं। यह पर्युषण का पर्व आमोद-प्रमोद का नहीं, मिठाइयां खाने का नहीं, यह पर्व तो साधना का, न खाने का, तपस्या करने का, द्रव्यों की सीमा करने का पर्व है, आत्मा का पर्व है। होली, दीवाली आदि भौतिक पर्व हैं। होली पर रंग आदि के द्वारा मनोरंजन किया जाता है। दीपावली पर नए वस्त्र धारण किए जाते हैं, बाजार को सजाया जाता है, मिठाइयां खाई जाती हैं, आतिशबाजी की जाती है, यह सब भौतिक है। पर्युषण में न तो बाजार सजाने की बात है, न मिठाइयां खाने की बात है, इसमें तो केवल साधना की बात है। चूंकि आत्मा स्थायी तत्त्व है, शरीर अस्थायी है, इसलिए आत्मा से जुड़े हुए पर्युषण पर्व को पर्वाधिराज कहा जाता है।

पर्युषण शब्द परि उपसर्ग से बना है। प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव आदि संस्कृत के प्रसिद्ध उपसर्ग हैं। हिन्दी में भी चलते हैं। उपसर्ग से कई बार धातु का अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। संस्कृत में एक श्लोक आता है--

उपसर्गेण धात्वर्थो, बलादन्यत्र नीयते।
विहाराहारसंहारप्रहारप्रतिहारवत्।।

उपसर्ग लगाने से धातु का अर्थ परिवर्तित भी हो सकता है। जैसे हार शब्द के आगे वि उपसर्ग लगा दिया जाए तो विहार शब्द बन जाता है और उसका अर्थ है यात्रा। उप उपसर्ग लगा दिया तो उपहार शब्द बन जाता है। उपहार अर्थात् भेंट। सं उपसर्ग लगाने से संहार शब्द बन जाता है, जिसका अर्थ है नष्ट करना। आ उपसर्ग लगाने से आहार शब्द बन जाता है। आहार यानी खाना। प्र उपसर्ग लगाने पर प्रहार शब्द बन जाता है, जिसका अर्थ है आघात। इस प्रकार उपसर्गों से धातु का अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। यह शब्द है पर्युषण। परि सामस्त्येन उषणम् वसनम् पर्युषणम्। सर्वथा सर्व प्रकार से सर्वथा निवास करना अन्य निवासों से सिमट कर एक जगह संपूर्ण प्रवास करना पर्युषण होता है। जैसे हम यहां राजरहाट-कोलकाता में अभी पर्युषणा में हैं। एक जगह स्थिर होना यानी संपूर्णतया अन्य स्थानों पर विहार बंद कर एक स्थान पर प्रवास करना पर्युषण होता है। वैसे तो साधु का वर्षावास का स्थापन पर्युषण होता है। यह सामान्तया आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा/चतुर्दशी को होता है। मान लो चतुर्मास का कोई स्थान न मिले तो क्या करना चाहिए? बताया गया कि यदि आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तक स्थान न मिले तो श्रावण कृष्णा पंचमी तक पर्युषण किया जा सकता है। चतुर्मास की स्थापना कर लो। तब तक भी स्थान न मिले तो श्रावण कृष्णा दशमी को, तब तक भी स्थान न मिल पाए तो श्रावण कृष्णा अमावस्या को पर्युषण किया जा सकता है। आगे भी स्थान न मिले तो श्रावण शुक्ला पंचमी/दशमी/पूर्णिमा/भाद्रपद कृष्णा पंचमी/दशमी/अमावस्या को भी पर्युषण किया जा सकता है। उसके बाद भी स्थान न मिले तो भाद्रपद शुक्ला पंचमी को तो कहीं न कहीं ठहरना होता है, कहीं न कहीं चतुर्मास की स्थापना करनी ही होती है। मकान न मिले तो पेड़ के नीचे रहना पड़ सकता है, भाद्रपद शुक्ला पंचमी का लंघन नहीं करना चाहिए।

तब तक तो चतुर्मास स्थापित करना ही होता है, पर्युषणा करनी होती है। इस प्रकार भाद्रपद शुक्ला पंचमी तक भी चतुर्मास की स्थापना की जा सकती है। आजकल तो प्रायः ऐसी नौबत नहीं आती है, किन्तु यह एक विधान है, व्यवस्था है कि जगह न मिले तो भाद्रपद शुक्ला पंचमी तक भी चतुर्मास की स्थापना यानी पर्युषणा की जा सकती है। भाद्रपद शुक्ला पंचमी चतुर्मास की स्थापना का अंतिम दिन होता है।

आज के दिन साधु को चारों आहारों का परित्याग रखना होता है। दो रात और एक दिन लगातार साधु को भोजन तो दूर एक बूंद पानी भी नहीं पीना होता है। हमने कल सायंकाल चार आहारों का त्याग कर दिया, जो आने वाले कल के सूर्योदय तक रहेगा। हर साधु-साध्वी के लिए यह व्यवस्था है। भले वह नेपाल, बिहार, राजस्थान, देश-विदेश कहीं रहे, लगभग छत्तीस घंटों तक निराहार रहना होता है। आज के दिन श्रावकगण भी उपवास करते हैं, पौषध करते हैं। संवत्सरी के साथ साधुओं की पांच बातें जुड़ी हुई हैं। पहली बात--साधु का केश लोच आज के दिन से जुड़ा हुआ है। आज के दिन साधु के माथे पर गो लोम से बड़े बाल नहीं होने चाहिए। आज के दिन सिर मुंडित होना चाहिए, मस्तक ही नहीं दाढ़ी-मूंछ के बाल भी नहीं रहने चाहिए। आज के दिन से पहले-पहले लोच कराना अनिवार्य है। अगर कोई साधु किसी कारण से लोच न करा सके और विकल्प को काम में ले तो उसे प्रायश्चित्त स्वीकार करना चाहिए। मूल विधि लोच है, मुंडन तो अपवाद विधि है। सामान्यतया वर्ष में एक बार तो केशापनयन करना ही होता है, काफी साधु-साध्वियां साल में दो बार भी मस्तक का लोच करा लेते हैं, और संत दाढ़ी-मूंछ का लुंचन तो वर्ष में चार-पांच बार भी कर लेते हैं।

दूसरी बात--साधु को संवत्सरी के दिन सायंकाल सावंत्सरिक प्रतिक्रमण करना होता है। तीसरी बात उपवास करना होता है। चौथी बात है, वर्ष भर के दोषों की आलोयणा लेनी होती है और पांचवीं बात है संवत्सरी के उपलक्ष्य में साधु को खमतखामणा करना होता है। ऐसा नहीं कि अनबन हो गई, कोई बात हो गई और संवत्सरी को भी खमतखामणा न करे, यह अवांछनीय है। संवत्सरी के उपलक्ष्य में खमतखामणा हो ही जाना चाहिए, सारी पिछली बातों को भुला कर राग-द्वेष का भाव, आक्रोश का भाव छोड़ देना चाहिए।

पर्युषण/संवत्सरी के संदर्भ में श्रावक को व्याख्यान, शास्त्र-श्रवण करना चाहिए। चारित्रात्माओं के मुख से सुनने का मौका मिले तो और भी अच्छी बात है। तपस्या, उपवास भी करना चाहिए। संवत्सरी का उपवास तो यथासंभव करना ही चाहिए। खमतखामणा भी करना चाहिए। संवत्सरी का प्रतिक्रमण भी विशेष रूप से सुनना या करना चाहिए। संवत्सरी के उपलक्ष्य में श्रावकत्व की वर्ष भर की आलोयणा भी कर लेनी चाहिए। वर्तमान में पर्युषण के अंतर्गत श्रावक के लिए तीन सामायिक, दो घंटे मौन आदि कई नियम बने हुए हैं और पर्युषण के दिवस भी तय हैं, जैसे--खाद्य संयम दिवस, सामायिक दिवस आदि-आदि। प्रत्येक दिन के विषय भी निर्धारित हैं। इस रूप में यथौचित्य श्रावक लोग भी पर्युषण की आराधना करें, यह वांछनीय है।

सामान्यतया चतुर्मास लगने के पचास दिन बाद और सत्तर दिन पहले यानी पचास दिन और सत्तर दिन के बीच का जो समय है उस दिन संवत्सरी आती है। जैसे श्रावण के तीस दिन और भाद्रपद के बीस दिन, एक आषाढ़ी पूर्णिमा को भी साथ में जोड़ सकते हैं। कुल मिलाकर पचास और सत्तर दिनों का यह प्रारूप है। पचास और सत्तर के बीच में संवत्सरी आनी चाहिए, यह सामान्य व्यवस्था है।

साधु वर्षावास, चतुर्मास क्यों करता है? इसके पीछे मुख्य कारण अहिंसा है, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि वर्षा होती है, तब जीवोत्पत्ति हो जाती है, हरियाली हो जाती है, काई हो जाती है, छोटे-छोटे जीव-जंतु हो जाते हैं। इन महीनों में यात्रा करने से जीव-हिंसा हो सकती है। वर्षा लगने से अप्काय की हिंसा हो सकती है। जीव-हिंसा से बचने के लिए साधु का वर्षाकाल में एक जगह रहना आवश्यक हो जाता है। वर्ष के दो भाग हैं--एक वर्षावास और दूसरा ऋतुबद्धकाल या शेषकाल। वर्षावास में एक जगह रहने से अच्छा आगम स्वाध्याय, अच्छा अध्ययन, कुछ विकास का कार्य, लंबी तपस्या आदि भी हो सकते हैं। यह वर्ष की सुंदर व्यवस्था है कि

चार महीने एक जगह प्रवास करना और शेष आठ माह यथावस्था विहरण करना। चार मास में करणीय कार्य अच्छे रूप में हो सकता है। श्रावक समाज को भी चतुर्मास में साधु-साध्वियों की सन्निधि मिलने से धार्मिक व्याख्यान सुनने, धार्मिक साधना-आराधना करने और सीखने-धारने का अच्छा लाभ मिल जाता है। स्वयं की व्यक्तिगत साधना के लिए और श्रावकों की दृष्टि से भी साधु का चार मास एक जगह रहना अच्छा हो सकता है। इस रूप में यह वर्षावास या चतुर्मास की व्यवस्था अच्छी प्रतीत हो रही है।

संवत्सरी के संदर्भ में तिथि को लेकर थोड़ी समस्या हो जाती है। संवत्सरी तेरापंथियों की कभी मनाई जाती है, स्थानकवासियों में कभी मनाई जाती है और मूर्तिपूजकों में कभी मनाई जाती है। इस प्रकार श्वेताम्बरों में भी कोई संप्रदाय चतुर्थी, कोई संप्रदाय पंचमी, कोई संप्रदाय श्रावण और कोई संप्रदाय भाद्रपद में संवत्सरी मनाता है।

संवत्सरी की एक तिथि की निर्धारणा में चार समस्याएं मुख्य रूप से दिखाई देती हैं। पहली समस्या है दो श्रावण मास। कभी श्रावण महीने दो हो जाते हैं तो संवत्सरी में भेद हो जाता है। कोई-कोई मान्यता वाले दो श्रावण होने पर दूसरे श्रावण में पर्युषणा/संवत्सरी करते हैं। और कोई भाद्रपद में करते हैं, इस प्रकार एक महीने का फासला पड़ जाता है। दूसरी समस्या है दो भाद्रपद मास। कभी भाद्रपद दो हो जाएं तो कोई पहले भाद्रपद में संवत्सरी कर लेते हैं और कोई दूसरे भाद्रपद में करते हैं तो एक महीने का फासला पड़ जाता है। तीसरी समस्या है चतुर्थी और पंचमी की। कोई भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को संवत्सरी करता है तो कोई भाद्रपद शुक्ला पंचमी को। इसमें एक दिन का फासला पड़ जाता है। चौथी समस्या उदिया तिथि और घड़िया तिथि के सिद्धान्त के कारण होती है। तिथि कौन सी मानें, उदया तिथि मानें या घड़िया तिथि, उसके कारण भी एक दिन का फासला पड़ जाता है।

जैन ज्योतिष के अनुसार वर्षा ऋतु में अधिक मास नहीं होता यानी दो श्रावण, दो भाद्रपद होते ही नहीं हैं। अगर जैन ज्योतिष के अनुसार चतुर्मास का सारा काम चले तो न तो दो श्रावण होंगे और न भाद्रपद दो होंगे। दो श्रावण और दो भाद्रपद की समस्या पैदा ही नहीं होगी। संसार में लौकिक ज्योतिष चलता है, उसके अनुसार वर्षा ऋतु में भी दो महीने हो जाते हैं, इसलिए हमारे सामने यह स्थितियां आती हैं कि कभी दो श्रावण तो कभी दो भाद्रपद। जो लोग दो श्रावण होने पर दूसरे श्रावण में संवत्सरी करते हैं, या दो भाद्रपद होने पर पहले भाद्रपद में संवत्सरी कर लेते हैं तो उनका तर्क यह है कि आगम का सिद्धान्त है कि चतुर्मास स्थापना के पचास दिन बीतने पर संवत्सरी हो। दो श्रावण हों तो पहले श्रावण के करीब तीस दिन और दूसरे श्रावण के बीस दिन, कुल मिलाकर पचास दिन हो गए, अतः दूसरे श्रावण में संवत्सरी करनी चाहिए तथा दो भाद्रपद हों तो तीस दिन श्रावण के और बीस दिन पहले भाद्रपद के, यों पचास दिन होने पर पहले भाद्रपद में संवत्सरी करनी चाहिए। पचास दिन के सिद्धान्त को पालने के लिए उनका यह तर्क है। एक दृष्टि से यह तर्क ठीक है, परन्तु एक सिद्धान्त और है कि इधर पचास दिन और उधर सत्तर दिन रहने चाहिए, ज्यादा नहीं रहने चाहिए। दूसरे श्रावण में संवत्सरी करने पर या पहले भाद्रपद में संवत्सरी करने पर आगे सत्तर दिन से ज्यादा रह जाएंगे। वे करीब सौ दिन हो जाएंगे। पचास दिन वाले सिद्धान्त को तो निभा लिया, किन्तु सत्तर को नहीं निभा सके तो वहां सिद्धान्त खंडित हो जाता है।

यहां प्रश्न है कि दो महीना होने पर क्या करें? हमारे तेरापंथ धर्मसंघ में इसका एक समाधान दिया गया है कि अधिक मास की गणना नहीं करनी चाहिए। जैसे शरीर में कोई मेद बढ़ गई है तो बढ़े हुए भाग को काटा जाता है, न कि मूल अंग को। इस प्रकार श्रावण दो हों तो दूसरे श्रावण की गणना ही नहीं करनी। दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद को नहीं गिनना। इस अनुसार दो श्रावण हों तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हों तो पहले भाद्रपद में संवत्सरी होगी। ऐसा होने पर पचास-सत्तर का सिद्धान्त ठीक बैठ सकता है। हमारे धर्मसंघ

में इस प्रारूप को स्वीकार किया गया है। यद्यपि अधिक मास होने पर चतुर्मास प्रवास तो पांच माह का हो जाता है, किन्तु अधिक मास की गणना संवत्सरी की दृष्टि से हमारे यहां नहीं की जाती। हालांकि वर्तमान लौकिक पंचांग में तिथियां भी घटती-बढ़ती हैं, उससे पचास और सत्तर दिनों की गिनती में भी कुछ समस्या हो जाती है। ऐसी स्थिति में हमारे धर्मसंघ में कभी-कभी चतुर्दशी को चतुर्मास लगा देते हैं, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को चातुर्मासिक पक्खी हो जाती है। उसके बावजूद कभी-कभी संवत्सरी के बाद उनहत्तर दिन ही शेष रहते हैं, तो थोड़ा सामंजस्य बिठाना पड़ता है। सामंजस्य बिठाकर हम अपने जय तिथि पत्रक में निर्णीत कर लेते हैं कि इस दिन हमारे धर्मसंघ में संवत्सरी होगी। उस दिन के हिसाब से हमारी आराधना-साधना का यह क्रम चलता है।

मैंने यह संवत्सरी/पर्युषण पर कुछ बताने का प्रयास किया है। संवत्सरी की तिथि को लेकर कुछ समस्याएं भी हैं, परन्तु हमारे धर्मसंघ में रास्ता बहुत साफ है कि ऐसी स्थिति में ऐसे कर लेना चाहिए। हमारे पूर्वाचार्यों (आचार्य भिक्षु, जयाचार्य आदि) ने जो भी एक आधार दे दिया, रास्ता बता दिया, हम उसके अनुसार चलते हैं। इस संदर्भ में हमें उनके पद्य भी प्राप्त होते हैं, उनमें यह स्पष्ट है कि ऐसी स्थितियां आएं तो ऐसे कर लेना चाहिए। हमारा प्रारूप बना हुआ है, उस हिसाब से हमारे यहां संवत्सरी की व्यवस्था चल रही है और अपने-अपने संप्रदायों में अपनी-अपनी व्यवस्था चलती ही होगी। मैंने संवत्सरी के विषय में हमारे धर्मसंघ की व्यवस्था बताई है। (मेरे इस वक्तव्य में यत्किंचित् संशोधनीय बात हो सकती है, यदि वह हो तो सूचना मिलने पर उस पर ध्यान दिया जा सकेगा।)

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

क्षमापना दिवस

२७ अगस्त। क्षमापना दिवस। प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही हजारों लोगों की विराट उपस्थिति। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः ५.१५ बजे के आसपास अध्यात्म समवसरण में पधारे। आचार्यप्रवर द्वारा बृहत् मंगलपाठोच्चारण के पश्चात् क्षमापना कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति कोलकाता के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा-कोलकाता के अध्यक्ष श्री तेजकरण बोथरा, अणुव्रत समिति-कोलकाता के अध्यक्ष श्री महेन्द्र पारख, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कल्पना बैद, आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र दुगड़, तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचंद मालू और जय तुलसी फाउण्डेशन के मंत्री श्री सलिल लोढ़ा ने पूज्यप्रवर सहित चतुर्विध धर्मसंघ से क्षमायाचना की।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज क्षमायाचना का सुन्दर अवसर है। आत्मावलोकन का दिन है। जिसमें विनय का विकास होता है, वही खमतखामणा कर सकता है। क्षमा मांगना फिर भी आसान है, क्षमा करना कठिन है। जिसके भीतर विशेष भाव जागृत होता है, वही क्षमा कर सकता है। हम सभी अपने में मैत्री भाव का विकास करते रहें, ताकि हमारा सम्यक् दर्शन पुष्ट होता रहे।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'संवत्सरी और क्षमापना के अवसर पर ८४ लाख जीवयोनि के जीवों से खमतखामणा किया जाता है। उनसे विशेष रूप से खमतखामणा करना चाहिए जिनके साथ हमारा प्रतिदिन या यदा-कदा व्यवहार होता हो। क्षमापना पर्व ग्रंन्थियों को खोलने का एक अद्भुत पर्व है। हम अपनी राग-द्वेष रूपी भीतरी ग्रंथियों को खोलकर पवित्र बना सकते हैं। हमारे लिए एक बात विशेष ध्यान देने योग्य

है कि हमारे द्वारा हमारे परमपूज्यों/पूज्यों की आशातना जान या अनजान में भी न हो। क्योंकि कहा गया है कि गुरु की आशातना करने वाले को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। परम पूज्य आचार्यप्रवर पवित्र आत्मा हैं, क्योंकि आचार्यप्रवर ग्रंथिमुक्त हैं। हम भी ग्रंथि विमोचन कर पवित्रता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।' मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर द्वारा रचित गीत 'विश्व मैत्री की दिशा में हम कदम आगे बढ़ाएं' गीत का संगान किया।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने संभाषण में कहा--'हमारे भीतर राग-द्वेष के कांटे हैं, वे आत्मा में चुभते रहते हैं। क्षमापना दिवस इन्हें निकालने का पर्व है। ये कांटे जब निकल जाते हैं, व्यक्ति परम शांति का अनुभव करता है। आचार्यप्रवर हम सबको यह आशीर्वाद प्रदान करें कि वैर की गंदगी को बाहर फेंककर हम स्वयं को मैत्री के फूलों से सुवासित कर सकें।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज क्षमापना पर्व का कार्यक्रम चल रहा है। क्षमा शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण है। भगवान महावीर क्षमाश्रमण थे। उन्होंने अपने जीवन से जनता को क्षमा का बोधपाठ दिया। क्षमा में वह क्षमता है जो व्यक्ति के भीतर स्थित अहं को समाप्त करती है, रिश्तों को मधुर बनाती है और व्यक्ति को शांति और सुख देती है। अगर हमारे जीवन और भावों में क्षमा का भाव हो तो क्रोध का दावानल अपने आप शान्त हो जाता है। वास्तव में क्षमा लेना व देना बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। इस अवसर पर मैं परम पूज्य आचार्यप्रवर से विनम्र अनुरोध करूंगी कि आप हमें ऐसा पाथेय प्रदान करें--

महापर्व के शिखर दिवस पर, देव करें अभिनव बरसात।
सांस-सांस में मैत्री उतरे, खिल जाए जीवन जलजात ।।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन के प्रारंभ में संवत्सरी एकता के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण घोषणा करते हुए दो जैनाचार्यों को 'अध्यात्म ज्योति' अलंकरण से अलंकृत करने की भावना व्यक्त की।, पढ़ें गत विज्ञप्ति में। पूज्यप्रवर ने सांवत्सरिक खमतखामणा का प्रयोगिक स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--'मेत्तिं भूएसु कप्पए'--प्राणियों के साथ मैत्री करें। आज संवत्सरी की सम्पन्नता का संदर्भ है। खमतखामणा का समारोह आयोजित हो रहा है। हमें पिछली बातों के द्वेष भावों से जुड़े द्विष्ट संदर्भों को छोड़कर मैत्री का आत्मसात्करण करना चाहिए। संवत्सरी को लगभग एक वर्ष के लिए विदाई दी जा रही है। मैं आज व्यावहारिक रूप में भी खमतखामणा करना चाहूंगा।

साध्वीप्रमुखाजी हमारे धर्मसंघ के साध्वी समुदाय में सर्वोच्च हैं, प्रमुख हैं। आपसे दिन में अनेक बार मिलन का प्रसंग आ जाता है, अनेक विषयों पर चर्चा और चिन्तन हो जाता है। आप मेरे से अवस्था में करीब इक्कीस और संयम पर्याय में करीब चौदह वर्ष बड़े हैं। वार्तालाप, चिन्तन-मन्थन में अथवा अन्य किसी रूप में मेरी ओर से कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो, आपकी आशातना हो गई हो तो मैं आपसे बारंबार खमतखामणा करता हूं। (साध्वीप्रमुखाजी ने बद्धांजलि खड़े होकर आचार्यप्रवर से सविनय खमतखामणा किए।)

श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं', जो हमारे धर्मसंघ के मंत्री स्थान पर विराजमान हैं। वे अभी जयपुर हैं, क्षेत्रीय दृष्टि से दूर हैं। पूरे वर्ष में वैचारिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उनकी कोई आशातना हो गई हो, उनके मन को मेरी ओर से कोई ठेस पहुंची हो तो मैं विनयपूर्वक वन्दना करता हुआ उनसे तीन करण तीन योग से खमतखामणा करता हूं, उनके स्वास्थ्य और साधना की मंगलकामना करता हूं।'

मुख्यनियोजिकाजी भी साध्वी समुदाय की व्यवस्था से जुड़ी हुई हैं, साध्वीप्रमुखाजी के अनंतर सहयोगी हैं, यदा-कदा बात का प्रसंग आ जाता है, किसी प्रकार का कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो तो आपसे भी बारंबार खमतखामणा। (मुख्यनियोजिकाजी ने सविनय वंदन कर आचार्यप्रवर से खमतखामणा किए।)

साध्वीवर्या से भी वार्तालाप, वाचन आदि का कार्य पड़ता रहता है, कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो तो साध्वीवर्या से बारंबार खमतखामणा। (साध्वीवर्याजी ने विनयपूर्वक वंदना कर आचार्यप्रवर से खमतखामणा किए।)

गुरुकुलवासी साध्वियों से बात का कार्य कुछ कम पड़ता है, फिर भी व्यवहार में अप्रियता हो गई हो अथवा कोई अप्रिय शब्द प्रयुक्त हो गया हो तो गुरुकुलवासी साध्वियों से बारंबार खमतखामणा। (गुरुकुलवासी साध्वियों ने विनम्र भाव से वंदना कर पूज्यप्रवर से क्षमायाचना की।)

मुख्यमुनि से काफी काम पड़ता रहता है। ये मेरे सचिव के रूप में काम कर रहे हैं। व्यवहार में अथवा कोई विचार आदि बताने में कोई अप्रियता हो गई हो तो तुमसे बारंबार खमतखामणा। (मुख्यमुनिश्री ने अपने मस्तक से पूज्यप्रवर के चरण का स्पर्श कर पूज्यवर से सविनय खमतखामणा किया।)

मुख्यमुनि के सिवाय मुनिश्री धर्मरुचिजी स्वामी आदि गुरुकुलवासी संतों से मानों दिन-रात का संपर्क रहता है, सोते-जागते, उठते-बैठते कई बातों का संपर्क रहता है। कभी कुछ कहने व व्यवस्था देने में कोई अप्रियता हो गई हो तो सभी गुरुकुलवासी संतों से बारंबार खमतखामणा। (गुरुकुलवासी मुनिवृंद ने पूज्यप्रवर को सविनय भाव से सामूहिक वंदन कर पूज्यप्रवर से क्षमायाचना की।)

बहिर्विहार में मुझसे कई रत्नाधिक सन्त हैं तो बहुत से अवमरात्निक संत भी हैं। मैं सभी बहिर्विहारी संतों से यहां बैठा-बैठा खमतखामणा करता हूं।

बर्हिविहार में काफी बड़ा साध्वी समुदाय भी है। बहिर्विहारी साध्वियों से भी मेरा संवत्सरी संबंधी खमतखामणा।

समणश्रेणी में एक समण और कई समणियां हैं। यहां अवस्थित कुछ समणियों से खमतखामणा और बाहर स्थित समणश्रेणी के सभी सदस्यों से भी मेरा खमतखामणा। (उपस्थित समणीवृंद ने आचार्यप्रवर से सविनय बद्धांजलि क्षमायाचना की।)

मुमुक्षु बाइयां यदा-कदा यहां आती हैं। बाहर जाकर कार्य भी करती हैं। सभी मुमुक्षु बाइयों से बारंबार खमतखामणा।

उपासक श्रेणी के सदस्य यात्राएं करते हैं, कार्य भी करते हैं, प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, उन सभी से मेरा खमतखामणा।

यहां और बाहर हमारा विशाल श्रावक वर्ग है। कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो तो अत्रस्थ व बहिःस्थ सभी श्रावकों से मेरा बारंबार खमतखामणा। (उपस्थित श्रावक समाज ने करबद्ध होकर तथा 'वन्दे गुरुवरम' का विनयपूर्वक उच्चारण कर आचार्यप्रवर से क्षमायाचना की।)

श्राविका समाज यहां है, बाहर भी बहुत श्राविकाएं हैं, कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो तो सभी श्राविकाओं से बारंबार खमतखामणा। (उपस्थित श्राविकाओं ने सविनय वंदना कर आचार्यप्रवर से क्षमायाचना की।)

प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कमलजी दुगड़ और उनकी टीम को व्यवस्था आदि के कार्य में कुछ कहने व सुनने में कोई अप्रियतापूर्ण व्यवहार हो गया हो तो कमलजी दुगड़ आदि सभी कार्यकर्ताओं से मेरा बारंबार खमतखामणा।

जिस परिसर में हम लोग प्रवास कर रहे हैं, उसके ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी दुगड़ और मुख्य न्यासी भीखमचंदजी पुगलिया हैं। इस ट्रस्ट से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं से व्यवहार में कोई अप्रियता हो गई हो तो बारंबार खमतखामणा।

विभिन्न केन्द्रीय संस्थाएं और उनसे जुड़ी संस्थाओं के पदाधिकारियों से यदा-कदा कार्य पड़ जाता है, सभी संस्थाओं व न्यासों से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ कोई अप्रिय व्यवहार हो गया हो तो बारंबार खमतखामणा।

जैन शासन के विभिन्न आचार्यों, उपाध्यायों आदि-आदि से भी संवत्सरी के पावन अवसर पर मेरा बारंबार खमतखामणा।

तेरापंथ से गणमुक्त साधु-साध्वियों से कोई अप्रियतापूर्ण व्यवहार हो गया हो तो बारंबार खमतखामणा। जैनेतर धर्मों के धर्मगुरु आदि-आदि लोगों से भी मेरा खमतखामणा।

विभिन्न राजनेताओं से मिलना होता है, कभी दूर से भी संवाद हो जाता होगा। प्रबुद्ध लोगों, साहित्यकारों, उद्योगपतियों आदि-आदि से भी संपर्क हो जाता है, उन सबसे भी संवत्सरी संबंधी खमतखामणा।

विभिन्न कर्मचारी यहां रहते हैं, उनके साथ कोई अप्रियता का व्यवहार हो गया हो तो उन सबसे खमतखामणा।

सुरेन्द्रकुमारजी सुराणा, जो आचार्य भिक्षु समाधिस्थल संस्थान से संबद्ध हैं, से संवत्सरी के अवसर पर मेरा बारंबार खमतखामणा। उनके परिवार के सदस्यों को जाने-अनजाने कोई कष्ट पहुंचा हो तो मेरी ओर से उनके परिवार के सदस्यों से भी बारंबार खमतखामणा। इन सबके सिवाय भी कोई अवशेष रह गया तो सबसे मेरा खमतखामणा।'

सांवत्सरिक आलोयणा

पूज्यप्रवर ने वार्षिक आलोचना प्रदान करते हुए कहा--'संवत्सरी वर्षभर की आलोयणा का अवसर भी है। हम सभी चारित्रात्माओं को परिष्ठापन (बड़ी नीत के सिवाय) आदि के संदर्भ में एक-एक उपवास की आलोयणा दी जा रही है। कोई दोष लगा अथवा न लगा एक-एक उपवास हम स्वीकार कर रहे हैं।

श्रावक-श्राविकाओं को वार्षिक आलोयणा के रूप में तीन-तीन उपवास और नवकार मंत्र की इक्कीस-इक्कीस माला दी जा रही है। उपवास न हो सके तो एक उपवास के बदले दो एकासन कर सकते हैं अथवा एक उपवास के बदले नमस्कार महामंत्र की बारह माला जपी जा सकती हैं। साधन का उपयोग करने वाले चारित्रात्माएं अपने-अपने हिसाब से यथाविधि आलोयणा ले लें।'

परम पूज्य कालूगणी का श्रद्धा के साथ स्मरण

तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य महामना कालूगणी के महाप्रयाण दिवस पर उनका स्मरण करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'आज परम पूज्य आचार्य कालूगणी की महाप्रयाण तिथि है। हम पूज्य कालूगणी का श्रद्धा के साथ बार-बार स्मरण करते हैं। उनकी वार्षिक पुण्यतिथि हमें त्याग-वैराग्य और संयम की साधना की प्रेरणा दे सके, मंगलकामना।'

कार्यक्रम के दौरान साध्वियों ने परम पूज्य आचार्यप्रवर को सविधि वंदन कर पूज्यप्रवर से सविनय क्षमायाचना की। साधुओं और साध्वियों में पारस्परिक खमतखामणा का भी उपक्रम रहा। इस उपक्रम को मुनिवृंद की ओर से मुनि दिनेशकुमारजी तथा साध्वीवृंद की ओर से साध्वी जिनप्रभाजी ने संचालित किया। श्रावक और श्राविकाओं ने पूज्यप्रवर व चारित्रात्माओं से और पारस्परिक खमतखामणा किए। इस उपक्रम का संचालन तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री सुरेश गोयल ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पुत्रों के लिए चिन्तन सामग्री

२८ अगस्त। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी सृष्टि में विभिन्न प्राणी रहते हैं, उनमें एक है मनुष्य। मानव सृष्टि का एक विभाग है। उसकी परंपरा भी चल रही है संतान उत्पत्ति की यह शृंखला मानव जाति को आगे से आगे बढ़ाती है। गृहस्थ जीवन में संतान उत्पत्ति भी की जाती है। संतान उत्पत्ति भी विवाह का एक प्रयोजन होता है, ऐसा लगता है। मनुष्य के मन में पुत्रैषणा होती है।

पुत्र चार प्रकार के होते हैं। उनमें पहला होता है अतिजात। जो पुत्र अपने पिता से अधिक होता है,

वह अतिजात होता है। ज्ञान, साधना, बल और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में पिता से आगे निकल जाना अतिजात पुत्र के लक्षण हैं। वे पिता इस माने में धन्य हैं कि उनका पुत्र उनसे आगे निकल जाता है।

पुत्र का दूसरा प्रकार है अनुजात। कोई पुत्र पिता से आगे नहीं निकलता, किन्तु उनके समान विकास कर लेता है, वह अनुजात पुत्र है।

तीसरे प्रकार का पुत्र अवजात कहलाता है। वह पुत्र, जो पिता से पीछे रह जाता है, अवजात होता है।

पुत्र का चौथा प्रकार है कुलांगार। वह पुत्र, जो कुल की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है, वह कुलांगार पुत्र होता है। चोरी करने वाला, हिंसा और कलह में ज्यादा रत रहने वाला पुत्र कुल के यश के नाश के लिए अंगारे के समान होता है।

वह पिता मानों कि गौरवशाली, भाग्यशाली होता है, जिसका पुत्र उससे आगे निकल जाता है। पिता के अपने पुत्र के प्रति कुछ कर्त्तव्य भी होते हैं। जो पिता अपने पुत्र को योग्य व सक्षम बना देता है, वह कृत-कृत्य बन जाता है। सांसारिक दृष्टि से पिता की सेवा और उनकी आवश्यकता पूर्ति के प्रति जागरूक रहना पुत्र का कर्त्तव्य होता है। संतान को उत्पन्न करना एक बात है, निष्पन्न करना दूसरी बात होती है। यही संदर्भ गुरु और शिष्य के साथ जुड़ जाता है। शिष्यों को योग्य व सक्षम बनाना गुरु का कर्त्तव्य होता है। जैसे पिता अपने पुत्री को अच्छे घर में नियोजित करने का प्रयास करता है, उसी प्रकार शिष्य को समुचित स्थान पर नियोजित करना गुरु का कर्त्तव्य होता है। शिष्यों का भी गुरु के प्रति कर्त्तव्य होता है।

पुत्रों के लिए ये चार प्रकार चिन्तन की अच्छी सामग्री बन सकते हैं कि वे किस कोटि के पुत्र हैं। चारों प्रकारों में प्रथम अतिजात पुत्र श्रेष्ठ होता है।

पूज्यप्रवर ने तेरापंथ प्रबोध आख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'दया' का विवेचन प्रारम्भ किया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त साध्वीवर्याजी ने जनता को प्रतिबोध दिया।

कार्यक्रम के दौरान अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना बैद ने वर्ष २०१७ का श्राविका गौरव अलंकरण श्रीमती प्रतिभा दूगड़, वर्ष २०१६ का प्रतिभा पुरस्कार श्रीमती हंसा दसाणी, सुश्री यशिका खटेड़ व वर्ष २०१७ का प्रतिभा पुरस्कार डा. अंजुला विनायकिया व श्रीमती सूरजबाई बरड़िया को दिए जाने की घोषणा की।

अमनोज्ञ स्थिति में भी समभाव रखें

२९ अगस्त। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्तध्यान चार प्रकार का होता है। अमनोज्ञ संयोग से संपृक्त होने पर उस (अमनोज्ञ विषय) के वियोग की चिन्ता में निमग्न होना आर्तध्यान का पहला प्रकार है। जो मन को प्रिय लगे, वह मनोज्ञ और जो प्रिय न लगे, वह अमनोज्ञ है। अमनोज्ञ स्थिति में आदमी यह सोच सकता है कि इससे कब छुटकारा मिलेगा। किसी व्यक्ति को सश्रम कारावास मिल जाता है तो वह उससे मुक्त होने के लिए तड़पता है तो वह अमनोज्ञ स्थिति से संदृब्ध आर्तध्यान हो जाता है। गर्मी के मौसम में तेज धूप से मुक्त होने के लिए तड़पता है, वह भी संदृब्ध आर्तध्यान हो जाता है। वर्षा की स्थिति में ओले बरसने लगे, तब राहगीर उस स्थिति से मुक्त होने के लिए तड़पता है, वह भी संदृब्ध आर्तध्यान है। आदमी के जीवन में अमनोज्ञ स्थिति के अवसर आ सकते हैं, किन्तु आदमी को उस समय आर्तध्यान में नहीं जाना चाहिए। समत्व में रहने का प्रयत्न करना चाहिए। एक स्थिति में एक आदमी पाप कर्म बंध करता है तो दूसरा आदमी उसी स्थिति में कर्म निर्जरा कर लेता है।'

आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान श्रृंखला के अंतर्गत धर्म की कसौटियों

का वर्णन किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में मुख्यनियोजिकाजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् साध्वीवर्याजी का वक्तव्य हुआ। कटक मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। कटकवासियों ने गीत को सामूहिक प्रस्तुति दी।

२४वां विकास महोत्सव

३० अगस्त। भाद्रपद शुक्ला नवमी। तेरापंथ धर्मसंघ का २४वां विकास महोत्सव। परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्य तुलसी एक महान सहज योगी और अप्रमत्त साधक थे। भाव क्रिया, विधायक चिन्तन और समभाव उनकी महान योगसाधना के लक्षण थे। उनके जीवन में समग्रता थी। वे जब प्रवचन करते थे, लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वे गहनतम विषय को भी सरलता से समझाना जानते थे। संघर्षों में भी वे निरंतर आगे बढ़ते रहे। सम्मान और अपमान दोनों परिस्थितियों में वे समत्वलीन रहे। विकास महोत्सव के अवसर पर हम आचार्यप्रवर से यही आशीर्वाद चाहते हैं कि हम भी भावक्रिया, विधायक चिन्तन और समता के द्वारा अपनी योगसाधना को विकसित बनाते रहें।' साध्वीवर्याजी ने पूज्यप्रवर द्वारा उन्नीसवें विकास महोत्सव के उपलक्ष्य में रचित गीत 'संतो! भैक्षव शासन में नव्य विकास चाहिए' का संगान भी किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज विकास महोत्सव का आयोजन हो रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक महोत्सव मनाए जाते हैं। आचार्य तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन किया, यह इतिहास की एक दुर्लभ घटना है। कोई व्यक्ति साठ वर्षों तक अनवरत प्रगति शिखरों पर आरोहण करता रहे, संगठन के विकास के लिए नए-नए क्षितिज उद्‌घाटित करता रहे, संगठन के सदस्यों का अखंड विश्वास जिसे उपलब्ध हो, सब दिशाओं में जिसका वर्चस्व बढ़ रहा हो, जिसमें नेतृत्व करने की क्षमता भी हो, वह व्यक्ति अचानक सुनियोजित रूप से अपने पद का विसर्जन कर दे, यह बात काल्पनिक जैसी लगती है, किन्तु बीसवीं सदी के अंतिम दशक में आचार्य तुलसी ने इसका उदाहरण प्रस्तुत किया।

आचार्य तुलसी विक्रम संवत १९९३ में आचार्य पद पर आसीन हुए और तब से प्रतिवर्ष उनके आचार्य पदारोहण दिवस को पट्‌टोत्सव के रूप में मनाया जाता था, किन्तु विक्रम संवत् २०५० में आचार्य पद विसर्जन के बाद उन्होंने कहा कि अब मेरे पट्‌टोत्सव की प्रासंगिकता नहीं है, इसलिए इस वर्ष पट्‌टोत्सव नहीं मनाया जाएगा। करीब अट्‌ठावन वर्षों से पट्‌टोत्सव का आयोजन हो रहा था, उसको एकाएक स्थगित करना कैसा-कैसा ही लग रहा था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपनी सूझबूझ से गुरुदेव को निवेदन किया कि आप तो विकास के प्रतीक पुरुष हैं। संघ के विकास के लिए आपने कितना कुछ किया है। विकास के इस रथ को और आगे बढ़ाना है, इसलिए हम आपके पट्‌टोत्सव को विकास महोत्सव के रूप में मर्यादा महोत्सव की तरह इसे हमेशा मनाना चाहते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इस दिन को धर्मसंघ के विकास के साथ जोड़ा तो आचार्य तुलसी भी मना नहीं कर पाए और आज से तेईस वर्ष पूर्व विकास महोत्सव का सूत्रपात हो गया।

तेरापंथ धर्मसंघ में २५७ वर्ष के इतिहास में हमारे परम पूज्य आचार्यों ने विकास के नए-नए क्षितिज खोले और उनके नतीजे अपने-अपने उत्तराधिकारियों को सुपुर्द कर दिए और जो भी नए आचार्य आए, उन्होंने पूर्ववर्ती विकास के साथ अपने विजन को जोड़ा और उसे एक मिशन के रूप में आगे बढ़ाया। संघ को बेहतर बनाने के लिए समग्र संघीय विकास की परिकल्पना के साथ उसको जोड़कर उसे विकास के शिखर पर ले जाते रहे। इसलिए हम मान सकते हैं तेरापंथ एक विकासशील धर्मसंघ है। विकास के इस रथ को थामने वाले हाथ भी ताकतवर हैं। २५७ वर्षों से चली आ रही विकास की सरिता सागर बन जाए, यह काम्य है।

विकास के लिए अन्यान्य बातों के साथ समर्पण बहुत आवश्यक है। यद्यपि तेरापंथ में प्रत्येक साधु-साध्वी और प्रत्येक श्रावक-श्राविका को स्वतंत्र अधिकार है, किन्तु अंतिम निर्णय आचार्य का होता है अर्थात् समर्पण का महत्त्व होता है। हम अपने विचार गुरु के समक्ष रख सकते हैं, किन्तु हमारा समर्पण शत प्रतिशत हो। यदि समर्पण शत प्रतिशत होता है तो विकास को स्वतः गति मिलती है।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने पुरुषार्थ से संघ के विकास की गति को और अधिक आगे बढ़ा रहे हैं। आचार्यप्रवर तेरापंथ समाज के ही नहीं, अपितु जैन समाज के विकास की दृष्टि से भी चिन्तन करते हैं। इस बार खमतखामणा के अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर ने सांवत्सरिक एकता का जो आह्वान किया, वह भी विकास की दिशा में आचार्यप्रवर का नया कदम है। इस प्रकार परम पूज्य आचार्यप्रवर तेरापंथ धर्मसंघ को विकास के नए शिखरों पर ले जा रहे हैं। आज के दिन हम आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रति प्रणत हैं और यह कामना करते हैं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल नेतृत्व में पूरा धर्मसंघ विकास के नए शिखरों पर निरंतर आरोहण करता रहे।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्यों के चार प्रकार बताए गए--कुछ पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत होते हैं और उन्नत संकल्प वाले होते हैं। कुछ पुरुष ऐश्वर्य से उन्नत होते हैं, पर प्रणत संकल्प वाले होते हैं। कुछ पुरुष ऐश्वर्य से प्रणत होते हैं, किन्तु उन्नत संकल्प वाले होते हैं। कुछ पुरुष ऐश्वर्य से भी प्रणत और संकल्प से भी प्रणत होते हैं। विकास के लिए पुरुषार्थ का संकल्प होना चाहिए। उसके बिना विकास की ज्यादा आशा करनी ही नहीं चाहिए।

मनुष्यों के चार प्रकारों में पहला प्रकार है--ऐश्वर्य से उन्नत से और संकल्प से भी उन्नत। कुछ लोग सत्तासीन होते हैं और साथ में उनमें संकल्प भी उन्नत होता है। भगवान ऋषभ के संसारपक्षीय पुत्र चक्रवर्ती भरत बहुत ऐश्वर्य संपन्न थे। इस दुनिया में चक्रवर्ती से ज्यादा ऐश्वर्य संपन्न व्यक्ति तो कौन होगा? भरत के पास इतना विराट ऐश्वर्य, प्रभुता व सत्ता थी और साथ में उनका संकल्प भी आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत था, जीवन अनासक्त था। उन्होंने अपने जागरण के समय मंगलपाठ करने वाले मंगलपाठकों से कहा कि मेरा जागने का समय हो तो ऐसी ध्वनि किया करो--'मा हन, मा हन, मा हन' ताकि मुझे प्रेरणा मिल सके कि हिंसा मत करो, अहिंसक रहो। मंगलपाठकों ने वैसी ध्वनि करनी शुरू कर दी और भरत में आध्यात्मिकता का विकास हो गया। इस प्रकार चक्रवर्ती भरत ऐश्वर्य से भी उन्नत थे और उनमें आध्यात्मिक संकल्प भी उन्नत था।

कुछ लोग ऐश्वर्य से उन्नत होते हैं, पर उनका संकल्प प्रणत होता है। दुनिया में जिनके पास सत्ता है, पर उनका संकल्प प्रणत है, वे दूसरे प्रकार के मनुष्य होते हैं। वे दूसरों के धन को छीनने, दूसरों के सत्त्व हरण का प्रयास भी कर सकते हैं।

दुनिया में ऐसे भी कुछ लोग हो सकते हैं, जो ऐश्वर्य से प्रणत हैं, पर संकल्प से उन्नत हैं। अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे। उनके पिता का नाम था टामस लिंकन। घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर थी। यह घटना बचपन की है। पढ़ने का उन्हें बहुत शौक था। एक बार अपने अध्यापक एण्ड्रू क्राफर्ड के पास वाशिंगटन की जीवनी थी। वे उसे पढ़ना चाहते थे। अपने अध्यापक के पास पहुंचे और अनुनय-विनय करने के बाद पुस्तक प्राप्त करने में सफल हुए। वे खुशी-खुशी अपने घर पहुंचे और लैम्प के प्रकाश में पुस्तक पढ़ने लगे। पुस्तक पढ़ने में इतने लीन हो गए कि समय का कुछ पता नहीं लगा। पिता ने कई बार सोने के लिए कहा, किन्तु उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया। आखिर जब फिर पिता ने डांटा तो पुस्तक को झरोखे में रख लैम्प बुझाकर लेट गए। नींद आ गई। सुबह उठकर पुस्तक को देखा तो वह

बरसात के कारण पानी से कुछ खराब हो गई थी। बड़े घबराये। अध्यापक के सामने एक अपराधी की तरह खड़े हुए। अध्यापक ने कहा--'इसीलिए मैं किसी को पुस्तक नहीं देना चाहता। उसके सुरक्षित पहुंचने में मुझे संदेह रहता है। अब इसका दण्ड भरना होगा।' अब्राहम ने कहा--'मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।' अध्यापक बोले--'तीन दिन मेरे खेत में काम करो, फिर यह पुस्तक तुम्हारी हो जाएगी।' तीन दिन कड़ा परिश्रम किया। अध्यापक के सामने जब हाजिर हुए तो बहुत प्रसन्न थे। अब किताब उन्हें मिल गई। घर पर आए तो बहिन से कहा--'तीन दिन काम करना तो क्या? पुस्तक मेरी बन गई। अब इसे पढ़कर मैं भी ऐसा ही बनने का प्रयत्न करूंगा।' लिंकन ऐश्वर्य से प्रणत थे, किन्तु संकल्प से उन्नत। अर्थात् अब्राहम ऐश्वर्य से हीन थे, प्रणत थे, परन्तु उनमें एक अध्वसाय था, एक अच्छा संकल्प था। संस्कृत का सूक्त है 'शिवसंकल्पमस्तु मे मनः' मेरा मन कल्याणकारी शिव संकल्प वाला बना रहे।

दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो ऐश्वर्य से प्रणत होते हैं और उनका संकल्प भी प्रणत होता है। ईर्ष्या विकास में बाधा है। दूसरों का विकास देख कर आदमी को हर्ष होना चाहिए, सात्विक प्रसन्नता होनी चाहिए। यदि ऐसा होता है तो उसका स्वयं का भी विकास हो सकेगा। दूसरों का विकास देख-देख कर आदमी ईर्ष्या करेगा तो संभवतः वह और ह्रास की ओर चला जाएगा। किसी को पद मिला, प्रतिष्ठा मिली और कोई अच्छी चीज मिली तो उसके प्रति प्रमोद भाव रखना चाहिए। और दूसरों के दुःख में सहानुभूति रखना भी विकास का एक मार्ग है।

विकास के लिए आवश्यक है पास में ऐश्वर्य हो अथवा न हो, पर संकल्प उन्नत हो, विचार अच्छा हो। विचार अच्छा होता है, संकल्प अच्छा होता है तो आदमी विकास कर सकता है, आगे बढ़ सकता है।

परम पूज्य आचार्य तुलसी में कैसा संकल्प था कि वे राजस्थान से कोलकाता पधार गए, उन्होंने इतनी दूरी की यात्रा कर ली, और भी कितनी सुदूर यात्राएं कर लीं। उनमें उन्नत संकल्प था, तब इतना काम हुआ। उनके संकल्प या विचार का यह रूप भी देंखे कि उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया अर्थात् पास में जो ऐश्वर्य था, उसको भी छोड़ दिया, ठुकरा दिया। स्ववशता में सत्ता, आधिपत्य को छोड़ देना बहुत बड़ी बात है। हालांकि औचित्य तो देखना चाहिए। आचार्य तुलसी ने फरमाया था कि देखो, मैंने पद विसर्जन किया है, पर भविष्य में इसको परंपरा का रूप नहीं दिया जाए अर्थात् आचार्य तुलसी ने किया तो आचार्य महाप्रज्ञ भी करें, आगे वाले भी करें, ऐसी अपेक्षा नहीं है। संभवतः गुरुदेव ने मुझे नोट कराया--भविष्य में यह परंपरा नहीं बननी चाहिए कि हर आचार्य पद का परित्याग करे।

गुरुदेव तुलसी के उस पद के परित्याग से यह विकास महोत्सव निकला है। अगर पद का परित्याग नहीं होता तो शायद यह विकास महोत्सव की उत्पत्ति होती अथवा नहीं होती। पद के परित्याग ने विकास महोत्सव को जन्म दे दिया। आचार्य महाप्रज्ञजी के योग, स्फुरणा से एक व्यवस्थित स्थापना हो गई कि धर्मसंघ में विकास महोत्सव भी मनाया जाए। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी के न होने पर भी आज धर्मसंघ में विकास महोत्सव मनाया जा रहा है। यह भाद्रपद शुक्ला नवमी का दिन वर्षों तक हमारे धर्मसंघ में आचार्य तुलसी के पट्टोत्सव के रूप में मनाया जाता रहा था। अब वह पट्टोत्सव विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

हमारे धर्मसंघ भैक्षव शासन की स्थापना को २५७ वर्ष संपन्न हो चुके हैं, २५८वां वर्ष चल रहा है। हमें ध्यान देना चाहिए हमारे विकास की दिशा क्या रहे? विकास कई बार ऐसी दिशा में भी हो सकता है, जो नहीं होना चाहिए, जो अवांछनीय होता है। वह विकास, जो काम्य हो, अच्छा हो, निरवद्य हो, पवित्र हो, अभिलषणीय हो, कल्याणकारी हो, होना चाहिए। ऐसा विकास न हो, जो विकास कभी पश्चाताप कराने वाला

बन जाए। हम श्रावक समाज को भी देखें कि विकास की स्थिति क्या है? गृहस्थ जीवन में धन का विकास भी विकास है, परन्तु उसके साथ नैतिकता और संयम भी रहना चाहिए।

हमारा धर्मसंघ आचार्य भिक्षु द्वारा संप्रवर्तित है। हम उसमें साधना कर रहे हैं। हम चारित्रात्माएं आत्मनिष्ठा की दिशा में आगे बढ़ें, हमारी साधना विकसित हो। हमारी संघ निष्ठा मजबूत रहे कि संघ हमारा और हम संघ के हैं। हमारे मन में सेवा की भावना रहे। शासन की सेवा कर सकें। जहां कहीं सेवा की अपेक्षा हो, वहां जाने के लिए साधु-साध्वियां सैनिक की भांति तैयार रहें। भले रात के सवा बारह बजे भी जगाकर कह दिया कि वहां जाओ और सेवा करो तो यथासंभव तुरन्त उसकी क्रियान्विति का प्रयास करना चाहिए। जहां कहीं सेवा की अपेक्षा पड़े, हमारा शरीर भी हमें सहयोग देता रहे, स्वास्थ्य की अनुकूलता रहे, मनोबल अच्छा रहे, हम सेवा कर सकें। हमारे मन में सेवा भावना का विकास/पुष्टीकरण होते रहना चाहिए। चारित्रात्माएं ज्ञान के क्षेत्र में भी विकास करें। चारित्रात्माओं में आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा और आज्ञा निष्ठा का भी विकास होते रहना चाहिए। बड़ों की आज्ञा/निर्देश के प्रति मन में विशेष सम्मान का भाव रहना चाहिए।

तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालालजी छाजेड़, वृद्धावस्था में हो गए हैं, फिर भी यहां कोलकाता पहुंचे हैं। तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री बुद्धमलजी दूगड़ (कोलकाता), श्री मांगीलालजी सेठिया (दिल्ली) और श्री बनेचंदजी (कोलकाता) चार व्यक्तित्व यहां उपस्थित हैं। श्री पदमचंदजी पटावरी यहां उपस्थित नहीं हैं। ये समाज के वरिष्ठ व्यक्तित्व हैं। इनसे भी समाज को प्रेरणा मिले कि समाज को कैसे रहना चाहिए, समाज में कैसे संयम रहे, समाज कैसे अच्छा रहे? ऐसे अनुभवी वरिष्ठ व्यक्तित्वों से समाज को भी मार्गदर्शन, परामर्श, प्रेरणा मिलती रहे। जिन्होंने बहुत देखा है, काम किया है, बहुत अनुभव प्राप्त किए हैं, ऐसे लोगों से समाज को अच्छा दिशादर्शन व प्रेरणा मिल सकती है। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक सहित चार सदस्य यहां उपस्थित हैं, यह भी अच्छी बात है। गुलाबचंदजी चिंडालिया पहले थे, अब नहीं रहे। उन्होंने जैन विश्वभारती में कितना काम किया था, वे उसके अध्यक्ष रहे थे और मंत्री भी रहे थे। अच्छे चिन्तनशील व्यक्ति थे। श्री मूलचंदजी बोथरा और सिद्धराजजी भंडारी तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य थे, अब नहीं रहे। विकास महोत्सव से विकास की प्रेरणा ली जाए तो विकास महोत्सव का आयोजित होना अधिक संगत व सार्थक हो सकता है।

विकास महोत्सव के माध्यम से हम गुरुदेव तुलसी की स्मृति भी कर सकते हैं कि उन्होंने हमारे धर्मसंघ में विकास के लिए कितना आयास किया था, अध्यापन के द्वारा, अनुशासन के द्वारा, प्रेरणा के द्वारा, चिंतन के द्वारा, विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से, उन्होंने संघ के विकास का प्रयास किया था। धर्मसंघ ऐसे आचार्यप्रवर का स्मरण करते हुए मानों कृतज्ञता ज्ञापन करता है। उन्होंने हमारे धर्मसंघ को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया था, समाज को आगे बढ़ाया था। हम परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के प्रति प्रणति अर्पित करते हैं।'

आचार्यप्रवर ने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के हस्ताक्षरों से युक्त तथा आचार्य महाप्रज्ञजी के हाथों से लिखित विकास महोत्सव के आधार पत्र का भी वाचन किया। आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर स्वरचित गीत का संगान भी किया, जो पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। आचार्यप्रवर ने ६५ श्रावक-श्राविकाओं को विभिन्न संबोधनों से भी संबोधित किया, जिनकी सूची भी पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं।

कतिपय घोषणाएं

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर आगामी संभावित यात्रा पथ (कोलकाता से चेन्नई) की घोषणा की, जो

गत विज्ञप्ति में प्रकाशित है। इसके साथ आचार्यप्रवर ने और भी कुछ घोषणाएं कीं, जो इस प्रकार हैं--

- कटक मर्यादा महोत्सव के अवसर २४ जनवरी २०१८ के दिन सन् २०२० के मर्यादा महोत्सव के क्षेत्र का नाम बता देने का भाव है।
- परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का शुभारम्भ सन् २०१९ में बेंगलुरु के भिक्षु भारती (भिक्षुधाम ट्रस्ट) में करने का भाव है।
- २१ जुलाई २०१८ आषाढ़ शुक्ला नवमी को यथासंभव प्रातः करीब ८.२१ बजे माधावरम्-चेन्नई में चातुर्मासिक प्रवेश करने का भाव है।

पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों व समणश्रेणी के लिए चतुर्मास पश्चात्कालीन निर्देश भी प्रदान किए, पढ़ें गत विज्ञप्ति में।

कार्यक्रम में कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत का संगान किया। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़, सदस्य श्री बनेचंद मालू तथा सदस्य श्री मांगीलाल सेठिया ने भी अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पचास से अधिक प्रतिष्ठित उद्योगपति पूज्य सन्निधि में

आज अपराह्न में कोलकाता के लब्धप्रतिष्ठ पचास से अधिक उद्योगपति पूज्य सन्निधि में समुपस्थित हुए। महाश्रमण सभागार में उनके लिए पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में एक संगोष्ठी समायोजित हुई। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमल दुगड़ ने आगंतुकों का स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में उपस्थित उद्योगपतियों को संबोधित करते हुए जैन धर्म, साधुचर्या और अहिंसा यात्रा के विषय में विस्तारपूर्वक अवगति प्रदान की तथा उन्हें उत्प्रेरित करते हुए कहा--'हमारा विचार है कि गृहस्थ जीवन में अर्थ की आवश्यकता होती है। दो शब्द हैं--अर्थ और अर्थाभास। न्याय, नैतिकता से कमाया जाने वाला पैसा अर्थ है और अन्याय, अनैतिकता से कमाया गया पैसा अर्थाभास है। आदमी को अन्याय, अनैतिकता से अर्थोपार्जन नहीं करना चाहिए। न्याय, नैतिकता से अर्जित धन के उपभोग में भी संयम होना चाहिए। उसे दुर्व्यसनों और प्रदर्शन में बेकार नहीं बहाना चाहिए, पैसे का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। आदमी अर्थ के अर्जन में ईमानदारी रखे और उसके उपभोग में संयम रखे तो उसका जीवन अच्छा रह सकता है तथा समाज भी अच्छा रह सकता है।'

आचार्यप्रवर ने समुपस्थित उद्योगपतियों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया तो अधिकांश लोगों ने हाथ उठाकर संकल्पत्रयी स्वीकार करने की भावना व्यक्त की और अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर पूज्यप्रवर से तीनों संकल्प ग्रहण किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें इन संकल्पों के निष्ठा से अनुपालन की प्रेरणा भी प्रदान की।

विक्रम फोरजिंग लिमिटेड के चेयरमेन श्री हरिकृष्ण चौधरी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के कोलकाता महानगर में पदार्पण और चतुर्मास प्रवास से हमें जो खुशी प्राप्त हुई है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। पूरे विश्व में फैले आतंकवाद का निवारण आपकी अहिंसा यात्रा में निहित है, जो शांति, सद्भावना और नैतिकता की अलख जगाते हुए चल रही है। कोलकाता पधारकर हमें दर्शन प्रदान करने हेतु हम आपके चरणों में आभार अर्पित करते हैं।'

सिम्पलेक्स इंस्फ्रास्ट्रक्चर के चेयरमेन श्री विट्ठलदास मूंधड़ा ने कहा--'यहां आकर मुझे तीन बातों का अनुभव हुआ--पहली आस्था, दूसरी प्रेरणा और तीसरा आनंद। मैं समाज में फैले अंधकार के झंझावातों में एक प्रकाश स्तंभ की तलाश कर रहा था जो हमें आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की दो पुस्तकों में प्राप्त हुआ।

मुझे लगा कि उनका संदेश यदि संसार भर में फैल जाए तो पूरी दुनिया ज्योतित हो सकती है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से यहां एक आस्था का केन्द्र स्थापित हो गया है।'

रूपा एंड कम्पनीज के चेयरमेन श्री पी.आर. अग्रवाल ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। आपने जो तीन बातें कही हैं, हम लोग उन्हें अपने जीवन में उतारने की पूरी कोशिश करेंगे।'

अखिल भारतीय मारवाड़ी फेडरेशन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा--'हमारा यह सौभाग्य है कि आज आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष के हमें पुनः दर्शन प्राप्त हुए। सामाजिक और नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट को रोकने हेतु आपकी प्रेरणा व पथदर्शन बहुत उपयोगी है।' प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद ने आभार ज्ञापित किया।

एक साथ इतने उद्योगपतियों का किसी आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित होना अपने आप में विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण बात थी। वे आचार्यप्रवर के मिशन और जैन साधुओं की त्याग-तपस्यामय चर्या से अत्यंत प्रभावित हुए। संगोष्ठी में उपस्थित जैनेतर एवं अन्य जैन उद्योगपतियों के नाम इस प्रकार हैं--बिड़ला ग्रुप ऑफ कम्पनीज के अंतर्गत एमीरेटस के चेयरमेन श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला, सिम्पलेक्स इंस्फ्रास्ट्रक्चर के चेयरमेन श्री विट्ठलदास मूंधड़ा, विक्रम फोरजिंग लि. के चेयरमेन श्री हरिकृष्ण चौधरी रूपा एंड कंपनी के प्रबन्ध निदेशक श्री कुंज बिहारी अग्रवाल, कॉनकास्ट स्टील लि. के चेयरमेन श्री संजय सुरेका, मेनकाइंड फार्मा लि. के चेयरमेन श्री रमेश जुनेजा, नेलीर्माला जूट मिल्स कंपनी के निदेशक श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला, सवेरा साड़ीज प्रा.लि. के निदेशक श्री चंपालाल सरावगी, सृजन रियल्टी लि. के चेयरमेन श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, रूपा एंड कंपनीज के चेयरमेन पी.आर. अग्रवाल, क्रिस्टल ग्रुप के संस्थापक निदेशक श्री नंद किशोर अग्रवाल, जिन्दल स्टेनलेस लि. के उपाध्यक्ष श्री रतन साहा, श्री बालाजी स्टील लि. के प्रबन्ध निदेशक श्री आदित्य जाजोदिया, रतनलाल डालमिया प्रा. लि. के निदेशक श्री बालकृष्ण डालमिया, अमूल बिस्कुट्स के निदेशक श्री अमित सरावगी, सेशा इन्टरनेशनल के श्री शंकर बागड़ी, केवेन्टर एग्रो के चेयरमेन श्री महेन्द्र जालान, टैक्सम्याको इंस्फ्रास्ट्रकचर एंड होल्डिंग्स के निदेशक श्री संतोष कुमार रूंगटा, श्याम स्टील इंडस्ट्रीज के निदेशक श्री ललित बेरीवाल, गोरसिया डिजाइन एंड क्राफ्ट के निदेशक श्री जयवंत गोरसिया, आइडियल ग्रुप ऑफ कंपनीज के निदेशक श्री श्रवण हिम्मतसिंहका, क्योप्री ओवरसीज प्रा. लि. के निदेशक श्री निर्मल अग्रवाल, नगरिका कैपिटल के चेयरमेन श्री सुशील पटावरी, बेलानी प्रोजेक्ट्स के निदेशक श्री नन्दू बेलानी, हिमाद्री स्पेश्यलिटी केमिकल के निदेशक श्री श्याम सुन्दर चौधरी, अखिल भारतीय मारवाड़ी फेडरेशन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, विक्रम प्रोडक्शन के चेयरमेन श्री विक्रम भुवालका, एच.पी.एस.डी. एलक्लेव एल. एल.पी. के मैनेजिंग बॉडी सदस्य श्री हर्ष पाटोदिया, स्पिनक्राफ्ट इंडिया लि. के निदेशक श्री राज पाटोदिया, स्पेस ग्रुप ऑफ कंपनीज निदेशक श्री पीयूष भगत, चार्टर्ड एकाउंटेंट श्री बी.एन.केड़िया व जी.आई.एस. ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के चेयरमेन श्री हरनजीत सिंह, श्री आर.ए. पोद्दार, श्री सतीश कपूर, श्री शिव लोहिया, श्री भानीराम सुरेका व श्री पवन काजड़िया।

आर्तध्यान से बचें

३१ अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित व्याख्यानमाला के क्रम को आगे बढ़ाते हुए अपने पावन प्रवचन में आर्तध्यान के दूसरे प्रकार 'मनोज्ञ संयोग से संयुक्त होने पर उसके वियोग न होने की चिन्ता लीन होना' को विश्लेषित किया। पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला में 'पुण्यबंध' के संदर्भ में तेरापंथ की मान्यता प्रस्तुत की।

16 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
Date of Publication : 11-09-2017 L.No.-U (C) 200/2015-2017
(Page 1-16) Licence to Post without Pre-payment
8-14 सितम्बर 2017 Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पूज्यप्रवर के पदार्पण के पूर्व मुख्यनियोजिकाजी तथा पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

चतुर्मास पश्चात् विहार मृगशिर कृष्णा प्रतिपदा को

७ सितम्बर को परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में कहा--'इस वर्ष कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को चातुर्मासिक पक्खी है, किन्तु चारित्रात्माएं चतुर्मास को सम्पन्न मानकर मृगशिर कृष्णा प्रतिपदा (५ नवम्बर २०१७) से पहले चतुर्मास क्षेत्र से बाहर विहार न करें और न ही कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को वस्त्र बहरें। चतुर्मास की सम्पन्नता मृगशिर कृष्णा प्रतिपदा के सूर्योदय के साथ मानी जाए।

पावस-प्रवास में सुधार कर पढ़ें-

पावस-प्रवास विक्रम संवत् २०७४ के पृष्ठ २१ पर प्रकाशित उकलाना मण्डी चतुर्मास के अंतर्गत चतुर्थ नाम साध्वी चिन्मययशाजी पढ़ा जाए।

स्मारणा

- बहिर्विहार में ज्ञातिजनों के अतिरिक्त कोई व्यक्तिगत अथवा संघरूप में दर्शनार्थ न जाए। माता-पिता, भाई-बहन आदि निकटतम ज्ञातिजन एक जनवरी से इकतीस दिसम्बर तक (इस एक वर्ष की अवधि में) कुल मिलाकर इक्कीस रात्रियों से अधिक तथा अन्य ज्ञातिजन सात रात्रियों से अधिक अन्य क्षेत्र में जाकर ज्ञाति साधु-साध्वियों की सेवा के लिए न रहें। अपने क्षेत्र में कोई चारित्रात्मा का प्रवास न हो तो अपने जिले व अंचल में प्रवासित चारित्रात्मा के दर्शन-सेवा के लिए जाने में आपत्ति नहीं है। आचार्यप्रवर के विशेष इंगित की बात न्यारी।

(श्रावक संदेशिका धारा-१४८)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१०००/- श्रीमती किरणदेवी पुगलिया (धर्मपत्नी स्व.श्री धर्मचंदजी पुगलिया श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता) ने अपने ८२वें जन्मदिवस एवं सुपुत्र श्री भीखमचंद पुगलिया के ३१ की तपस्या के उपलक्ष्य में भीखमचंद-सुशीला, कुसुमलता-क्रांतिचंद, भरत-मेघा, अमृता-रजत, चन्द्रकांता, श्रेय, अर्हम जैन द्वारा प्रदत्त।
२१००/- चि. ललित कुमार लूंकड़ के ग्यारहवें वर्ष में मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य में उनके पिता श्री शांतिलाल माताजी प्रेमलता, बहिन सोनिका, श्रुति लूंकड़ परिवार कल्याण, ललित मोती सेन्टर मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०९७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी